अरदास में श्री ननकाणा साहिब जी का सत्य

-स. जगजीवन जोत सिंह आनन्द

हे अकाल पुरख आपणे पंथ दे सदा सहायी दातार जीउ! स्री ननकाना साहिब ते होरगुरदुआरिआं गुरधामां दे, जिनां तों पंथ नूं विछोड़िआ गिआ है, खुले दरशन दीदार ते सेवा संभाल दा दान खालसा जी नूं बख्शों।

उपरोक्त अरदास की इन पंक्तियों का स्पष्ट अर्थ है कि हे अकालपुरख, वाहिगुरु, परमात्मा.....श्री ननकाणा साहिब जी एवं अन्य गुरुद्वारा साहिबान जो (भारत विभाजन के कारण) पंथ से बिछुड़ गए हैं, के स्वतंत्र दर्शन अवसर, सेवा और प्रबंधन का महादान इस खालसा जी को प्रदान करों। (अरदास समक्ष श्री गुरुग्रंथ साहिब जी)।

गुरु नानकदेव जी का जन्मस्थान और सिख गुरु भूमि श्री ननकाणा साहिब (राय-भोए-दी-तलवंडी) पाकिस्तान में हैं। जिस गुरु नानकदेव जी के संदर्भ में यह लोकोक्ति प्रसिद्ध है-'नानक शाह फकीर, हिन्दुवां का गुरु, मुसलमानां का पीर'। उस गुरु नानकदेव जी की जन्मभूमि श्री ननकाणा साहिब जेहादी व फिरकी परस्ती वाली ताकतों के कारण हम सबसे जुदा है। सम्पूर्ण गुरुनानक नामलेवा संसार और भारतीयों के लिए यह विछोड़ा असहनीय है।

हम रोज अरदास करते समय श्री ननकाणा साहिब जी की सेवा और सम्भाल की प्रार्थना करते हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि श्री ननकाणा साहिब में धार्मिक रहत-मर्यादानुरूप प्रबंधन व स्वछंद सेवा की आदर्श स्थितियों का पूर्णतया अभाव है। इस आदर्श स्थिति की पुनर्स्थापना ही संगत की आकांक्षा है। 'सेवा-सम्भाल' वाली पंक्तियां अरदास में शामिल हो जाने के कारण सम्पूर्ण संगत, सम्पूर्ण वृहद समाज के समक्ष श्री ननकाणा साहिब में रहत-सेवा-संभाल की पुनर्स्थापना का लक्ष्य बन गयी है।

जेहादी मन की उपज है-पाकिस्तान। एक विचारी कट्टरवादी समाज-स्थापना की परिकल्पना और द्विराष्ट्रवाद एवं घृणा के जेहाद में भारत का विभाजन हुआ और पाकिस्तान अस्तित्व में आया। 'डायरेक्ट एक्शन' का जहर उगलने वाले मोहम्मद अली जिन्ना ने एक ऐसे पाकिस्तान की सरंचना की, जिसमें केवल जेहादी कट्टरपंथ के लिए ही स्थान था। इस असहिष्णु समाज ने गुरु नानकदेव जी के पवित्र जन्म स्थान पर आदर्श रहत मर्यादा कैसे कायम रह सकती थी? पाकिस्तान के जिस आरकेजाई क्षेत्र में सिखों से जबरन जजिया वसूल किया जाता हो, उस पाकिस्तान में मानवाधिकार की बात करना बेमानी है।

सन् 1920 में, इसी ननकाणा साहिब जी की पवित्रता व रहत मर्यादा कायम रखने के लिए एक महान आन्दोलन प्रारम्भ हुआ था। जिसे हम 'गुरुद्वारा सुधार लहर' के नाम से जानते हैं। गुरुद्वारा सुधार लहर के इस आन्दोलन के कारण ही एस.जी.पी.सी. एक्ट अस्तित्व में आया था। इस प्रकार, ऐतिहासिक दृष्टि से श्री ननकाणा साहिब जी गुरुद्वारा सुधार लहर का केन्द्र बिन्दु था। इस आन्दोलन का मूल विषय था-आदर्श धार्मिक मान्यताओं की पुनर्स्थाना। . .... और आज श्री ननकाणा साहिब पाक हुकूमत के कारण अपनी आदर्श रहत मर्यादा से वंचित हैं। यह महान पवित्र स्थान हमसे बिछुड़ सा गया है। पाकिस्तान की शासकीय व्यवस्था ओकाफ बोर्ड के साए में इस पवित्र स्थान पर सेवा और संभाल का विषय नए-नए प्रश्न खड़े कर रहा है।

श्री ननकाणा साहिब के सभी स्थान, जिसका किसी न किसी रूप में गुरु नानकदेव जी महाराज से संबंध है, बहुत ही पवित्र माना जाता है। वह स्थान, जहां वे बाल्यवस्था में अपने बाल सखाओं संग खेलते थे यहां जहां बाद में रात-रात प्रभु सिमरन में गुजारे, एक बड़े तालाब के रूप में विद्यमान है। इस तालाब को राय भुलार नामक जमीदार द्वारा निर्मित कराया गया था। इस तालाब को कोड़ामल द्वारा बाद में बड़ा किया गया था। कोड़ामल सिख इतिहास के सबसे क्रूरतम व्यक्ति व लाहौर प्रशासक जकरिया खां का मुंशी था। उसकी गुरु के प्रति आस्था थी। इस स्थान को 'बाल क्रीड़ा' नाम से जाना जाता है।

गुरु नानकदेव जी से संबंध अनेक लोग, जो वन-वन साथ घूमकर हरि सिमरन के सहभागी बनें, इतिहास के पृष्ठों पर भले ही अपना नाम अंकित न करवा पाएं हों। परन्तु राय-भोए-दी-तलवंडी क्षेत्र के वे वन, वह वनस्पति, वे मानव धन्य है, ऐसा गुरसिखों का मत है। वे मैदान, खेत पवित्र है, जहां बाबा नानक ने गाय चराई। यहीं राय भुलार ने सर्वप्रथम जाना कि उसका साक्षात्कार एक महामानव गुरु साहिब जी से हुआ है। 'किआड़ा साहिब' का वह स्थान

हमें प्रेरणा देता है।

श्री ननकाणा साहिब से पिता मेहता कल्याण (महता कालु जी) और भाई बाबा नानक जी ने बेबे नानकी जी की बिदाई सुलतानपुर के लिए की थी। बहन बेबे नानकी जी का विवाह तलवंडी के राजस्व अधिकारी जयराम जी से हुआ था।

इसी श्री ननकाणा साहिब जी में गुरु नानकदेव जी का पवित्र विवाह माता सुलखणी जी से हुआ था। माता सुलखणी जी बटाला निवासी बाबा मोला जी की पुत्री थीं।

श्री ननकाणा साहिब जी गुरुनानक देव जी की सभी **उदासियों** का केन्द्र बिन्दु भी था। धार्मिक प्रचार अभियानों के तहत किए गए गुरु नानकदेव जी के प्रवास **उदासी** कहलाए। यहीं उन्हें एक अनन्य अनुयायी के रूप में भाई मर्दाना जी मिले। भाई मर्दाना जी का जन्म भी श्री ननकाणा साहिब जी में हुआ। भाई मर्दाना जी ही गुरुनानक देव जी के साथ उदासियों में भिन्न स्थानों पर गए। लेकिन सभी प्रवासों का प्रारम्भ और अन्त श्री ननकाणा साहिब जी से ही हुआ।

आज पवित्र श्री ननकाणा साहिब जी की धरती पर एक इस्लामी देश पाकिस्तान का कब्जा है। कमजोर व लोभी राजनीतिज्ञों, छद्म सेक्युलरिस्टों और मोहम्मद अली जिन्ना के जेहादी 'डायरेक्ट एक्शन' के कारण अस्तित्व में आए पाकिस्तान में श्री ननकाणा साहिब जी की सेवा-संभाल का विषय महत्वपूर्ण हो गया है। धार्मिक स्वतंत्रता के अभाव में 'सिखी अणख' के समक्ष चुनौतियां खड़ी हो गयी है। फिर संगत द्वारा परवान अरदास की 'सेवा संभाल' वाली पंक्तियां सम्पूर्ण समाज को चेता रही है। ये पंक्तियां जागृत होने के लिए चेत जाने की प्रेरणा दे रही हैं।

वर्तमान का यक्ष प्रश्न है-क्या किसी धर्मान्ध इस्लमी राज्यों में अन्य धर्मावलम्बियों को सम्मान व धार्मिक आजादी प्राप्त हो सकती है? सभी प्रकार के आंकड़ों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि पाकिस्तान जैसे कट्टरवादी देश में इस्लाम के लिए अन्यान्य धार्मिक व सामाजिक समूह परतंत्रता का जीवन जी रहे हैं। इस प्रकार, यह मानना ही होगा कि पाकिस्तान में सिख परिवार बेबसी में रह रहे हैं।

यहूदी समाज सैंकड़ों साल बाद भी अपने पवित्र धार्मिक स्थान येरूस्लम को भुला नहीं पाए हैं। यह एक ऐतिहासिक सत्य है कि इस बात को मन में धारकर यहुदियों ने इजरायल की स्थापना की। गुरुओं द्वारा प्रदत्त वीर परम्पराएं चेता रही हैं कि श्री ननकाणा साहिब को हम विस्मृत कदापि नहीं करेंगे। सूक्षमता से चिन्तन करने पर हम पाएंगे कि संगत द्वारा परवान अरदास में 'सेवा-सम्भाल' वाली पंक्तियों में अखण्ड भारत का सूत्र छुपा है। अरदास हमें नित्य श्री ननकाणा साहिब जी के संदर्भ में अपना लक्ष्य स्मरण कराता ही है। एक वैराग्यमयी, वैश्विक बंधुत्व वाली नानक नामलेवा क्रांति श्री ननकाणा साहिब जी में धार्मिक मर्यादाओं की आदर्श स्थितियों की पुनर्स्थापना करेगी और अखण्ड भारत की अवधारणा सत्य करेगी। नित्य की जाने वाली अरदास का गहन चिन्तन कर सर्वसमाज अपने कर्तव्यों को पहिचानेगा। हम तब अपने लक्ष्यों को प्राप्त कर पाएंगे, जब सम्पूर्ण कश्मीर, पश्चिम पंजाब, सिंध आदि क्षेत्रों पर अरूण 'निशान साहिब' फहराया जाएगा। श्री ननकाणा साहिब जी की आजाद हस्ती में ही भारत की विजय है।●

बाबा सुन्दर जी का शबद् और अरदास

गुर सिख बाबा सुन्दर जी का शबद् श्री गुरुग्रंथ साहिब जी में अंकित है। वे कहते हैं कि गुरु ने ईश्वरीय मन का आदेश माना, अतः वह ईश्वर तक पहुंच गए। सत्यरूप गुरु ने परमेश्वर समक्ष अरदास की कि ''मेरे मान की रक्षा करना। प्रभु, यह मेरी अरदास है।'' बाबा सुन्दर जी गुरु के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देते हैं।

हरि भाणा गुर भाइआ गुरू जावै हरि प्रभ पासि जीउ॥
सतिगुरु करे हरि पहि बेनती मेरी पैज रखहु अरदासि जीउ॥